प्रदूषित तालाब की हो रही आयुर्वेदिक पद्धति से सफाई

- नैला के दर्री तालाब में दो बार डाल चुके दवा, दो डोज बाकी
- महीने भर में नतीजे का कर रहे दावा

■ नवभारत ब्यूरो। जांजगीर-चांपा.

जिला मुख्यालय जांजगीर के पांच वार्डों में अलग-अलग समय फैले डायरिया के बाद जागे नगर प्रशासन ने वहां के तालाबों की सफाई का निर्णय किया, जिसको लेकर दिल्ली की एक संस्था ने तालाब के पानी को खाली कराये बिना आयुर्वेदिक पद्धति से सफाई का जिम्मा उठाया और खर्चा भी एक माह बाद नतीजा मिलने के बाद देने की बात कही.

इसके बाद संबंधित संस्था द्वारा नैला के दर्री तालाब में आयुर्वेदिक पद्धति से दो बार दवा डाली जा चुकी है और दो डोज बाकी है. वार्ड क्रमांक 1,2 तथा 4,5 में डायरिया फैलने के बाद जागे नगर प्रशासन के सामने वहां के प्रदूषित तालाबों को साफ कराने की चुनौती थी. तालाब से पानी खाली कराने पर मोहल्लेवासियों के निस्तार की समस्या थी. वहीं स्वास्थ्य मंत्री के दौरे के बाद बिलासपुर के स्वास्थ्य विभाग की टीम ने इन वार्डों के 5 तालाबों के पानी को खाली करा सफाई करने की अनुशंसा की थी, जिसके बाद इस चुनौतीपूर्ण कार्य को पूरा करने दिल्ली की वैदिक काउनामिक्स संस्था ने पहल करते हुए नगर पालिका के अधिकारियों से मिलकर कार्य में सहयोग करने अपनी प्लानिंग प्रस्तुत की. टीम के सदस्यों ने बताया कि तालाब के पानी को खाली कराए बिना भी साफ किया जा सकता है. संस्था की पहल पर पालिका द्वारा निर्णय लिया गया कि वे एक तालाब की सफाई अपने खर्च पर करें. सफलता मिलने पर अन्य तालाबों में इसे प्रयोग करने तथा संस्था को पूरा खर्च का भुगतान करने का आश्वासन मिला. इसके बाद संस्था की टीम ने तालाब में दो बार दवा डालकर कार्य प्रारंभ कर दिया है. साथ ही आगामी दो सप्ताह में फिर से दवा डालने की बात कही है और इसके बाद तालाब के पानी को साफ होने का दावा किया जा रहा है. बहरहाल तालाब के पानी को साफ होने में कम से कम 15 दिन और इंतजार है, जिसके बाद इस प्रक्रिया की सफलता भी सामने आ जाएगी.

समय व खर्च कम होने का दावा

तालाब की सफाई में जुटे टीम के सदस्यों ने बताया कि आयुर्वेदिक दवा डाल कर सफाई करने से समय कम लगने के साथ ही खर्च भी ज्यादा नहीं लगने की बात कही है. उनका मानना है कि तालाब के पानी को खाली करने में ही कम से कम महीने भर लग जाएगा, फिर इसकी सफाई के बाद फिर से पानी भरने में समय लगेगा. इस प्रक्रिया में खर्च भी बहुत आएगा. इस तरह लोग करीब 6 माह तक परेशान रहेंगे, लेकिन अपनाई गई पद्धति के बाद एक माह में तालाब का पानी उपयोग करने लायक होने की बात कही गई है.